पाठ 4. दो बैलों की कथा

पाठ का परिचय

झूरी के पास दो बैल थे – हीरा और मोती। झूरी उन दोनों को बहुत प्यार करता था। एक बार झूरी की पत्नी का भाई, गया दोनों बैलों को अपने साथ गाँव ले जाने लगा। दोनों बैलों ने उसे बहुत तंग किया। लेकिन गया ने उन्हें घर ले जाकर रूखा-सूखा भूसा डाल दिया। रात को वे दोनों भागकर फिर झूरी के पास आ गए। झूरी उन्हें देखकर खुश हो गया। अगले दिन गया फिर उन्हें अपने साथ ले गया। अब गया ने उनसे बहुत सख्त काम लेना शुरू किया। गया की बेटी इन दोनों को बहुत प्यार करती थी। एक रात उसने बैलों को खोल दिया। वे दोनों वहाँ से भाग निकले। रास्ते में वे मटर के खेत में घुस गए। खेत के मालिक ने उन्हें पकड़कर काँजीहौस में बंद करवा दिया। रात को हीरा-मोती ने मिलकर दीवार तोड़ दी और सारे जानवर निकलकर भाग गए। लेकिन हीरा और मोती वहाँ से नहीं भागे। सुबह काँजीहौस के मालिक ने उन दोनों को एक व्यापारी के हाथों बेच दिया। बैल उस व्यापारी के साथ जब जा रहे थे तो उन्हें रास्ता जाना-पहचाना लगा। वे दौड़ पड़े। अब वे झूरी के पास पहुँच गए थे। झूरी उन्हें देख उनसे लिपट पड़ा। जब व्यापारी वहाँ पहुँचा तो मोती उसपर झपट पड़ा। व्यापारी डरकर वहाँ से भाग गया।

पाठ में निहित जीवन-मूल्य

हमें पशुओं के साथ सदा प्यार से रहना चाहिए। अगर हम उनसे प्यार करेंगे तो वे भी हमसे प्यार करेंगे। पशु भी अपना-पराया तथा प्यार और नफ़रत के भाव को समझते हैं।

पाठ का वाचन

अध्यापक/अध्यापिका पहले पूरी कहानी कक्षा में सुनाएँ। उसके बाद पुस्तक से कहानी का शुद्ध उच्चारणसहित वाचन करें। बीच-बीच में बच्चों से भी इसका शुद्ध उच्चारण करवाएँ। कठिन शब्दों के अर्थ बताते हुए पाठ की कठिन पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें।

महत्वपूर्ण चर्चा

निम्नलिखित प्रश्नों के आधार पर बच्चों से कक्षा में चर्चा करें –

- क्या तुमने भी कभी कोई पशु पाला है?
- क्या तुमने भी यह जाना है कि उनमें भावना होती है?
- पशु अपने मालिक को कैसे पहचान लेते हैं?
- सबसे वफ़ादार, पालतू और प्रिय जानवर कौन-सा है?